International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.57-61

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी शर्मा*
मीनाक्षी शर्मा**

सार

''कुछ सृजनशील मस्तिष्क ही सभ्यता में असाधारण परिवर्तन ला सकते हैं।'' सृजनात्मक कल्पना हृदय की धड़कन की भांति ही महत्वपूर्ण है। मानव इस अज्ञात जगत में भौतिक संसार के रहस्योउद्घाटन के लिए तथ्य ढूंढने का प्रयास कर रहा है। इसलिए मानव मस्तिष्क सृजनात्मक माना गया है। इसी सत्ता को पाषण युग से लेकर आधुनिक युग तक की सभी लोगों ने स्वीकारा है। अब मानव मस्तिष्क अपने विकास एवं अन्तप्रज्ञा की उत्कृष्ठ अवस्था में होता है तभी वह नई कृतियों का सृजन करता है तथा तभी वह सर्वथा नये विचारों को जन्म दे सकता है। सृजनात्मक शब्द अग्रेजी की क्रियेटीविटी शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके समानान्तर विधायकता, उत्पादकता शब्दों का प्रयोग होता है। उत्पादकता में प्रोडक्टीविटी का बोध होता है। जो कि किसी वस्तु के उत्पादन का आभास कराता है। विधायकता में एकत्रीकरण का बोध होता है। सृजनात्मका का अर्थ वैज्ञानिक अथवा कलात्मक सृजन से ही नहीं है। सृजनात्मकता व्यक्ति की किसी भी क्रिया में पायी जाती है। समाज में कार्य करने वाले हर व्यक्ति के कार्य अथवा व्यवसाय में सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। बढई लकडी से मनचाही कलात्मक मेज बना सकता है। चित्रकार मनरंगों से नवीन कलाकृति की रचना करता है। कवि, कविता रचता है तथा गीतकार गीतों की रचना कर सकता है। कहना यह है कि हर व्यक्ति में सृजन की संभावनायें होती है और उनका विकास किया जाना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के निजी व सरकारी विद्यालय के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता के प्रभाव में जागरूकता पाई जाती है।

शब्दकोशः *सृजनशील मस्तिष्क, सर्वेक्षण विधि, स्वनिर्मित प्रश्नावली, उत्पादकता।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में तेजी से बदली इस दुनिया में शिक्षा की धारणा में भी परिवर्तन हो रहा है। विद्यालय का कार्य केवल ज्ञान के संगठित भण्ड़ार के बने बनाये मूल्यों का स्थानान्तरण करना ही नहीं है, बल्कि छात्र को इस योग्य बनाना कि वह स्वयं अपने मूल्यों का निर्माण कर सके अपनी समस्याओं से निजात पाने के लिए नवीन, असाधारण एवं मौलिक हल खोज सकें। अपनी जन्मजात प्रतिभाओं का विकास करना ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राजस्थान।
** एम.एड.छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर, राजस्थान।

शिक्षा के दो पक्ष होते हैं – सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शिक्षा का मूल उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना होता है। इस दृष्टि से सिद्धान्तों का ज्ञान तो इसलिए कराया जाता है ताकि व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके। अतः सैद्धान्तिक ज्ञान की अपेक्षा व्यवहार परिवर्तन कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। सृजनशीलता भी व्यवहारिक पक्ष है, सृजनशीलता वह पहल है जिसे कोई भी व्यक्ति या बालक परम्परागत विचारक्रम से हटकर अपनी बौद्धिक क्षमता अनुसार अभिव्यक्त करता है।

कभी–कभी ऐसा भी देखने को मिलेगा कि कुछ लोग न शिक्षित हैं और न ही बौद्धिक दृष्टि से बहुत प्रखर हैं फिर भी वे अपनी सूझ–बूझ और निरन्तर अभ्यास से ऐसे–ऐसे कार्य करते हैं कि देखते ही बनता है। कोई रद्दी कपड़ों की कतरनों से बड़े आकर्षक हाथी–घोडे बनाता है तो कोई मिट्टी के पशु–पक्षियों की मूर्तियां बनाकर उनमें जान सी डाल देता है। वास्तविक अर्थों में सृजनषीलता यही है। अतः यह नहीं समझना चाहिए कि जो विद्यार्थी पढ़ने–लिखने में आगे नहीं है उनमें सृजनशीलता का विकास किया ही नहीं जा सकता। कलाओं तथा निर्माण कार्यों में सृजनशीलता के विकास की जितनी गुंजाइश है उतनी उनके सैद्धान्तिक ज्ञान के अर्जन में नहीं है।

समस्या का औचित्य

सृजनात्मकता मानव की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। किसी भी राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र के नागरिकों की सृजनात्मक शक्ति पर आधारित होता है। इसलिए सृजनात्मकता विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक आर्थिक एवं व्यक्तिगत उन्नति का अमोघ शास्त्र है।

आज हमारे देश में अनगिनत समस्यायें हैं। इनका समाधान करने के लिए ही हमें ऐसे बुद्धिमान एवं मौलिक चिन्तकों की आवष्यकता है जो हमारे देश में विद्यमान समस्याओं के समाधान के लिए उपयोगी, नवीन व महत्वपूर्ण हल प्रस्तुत करें। ये प्रषिक्षण किसके द्वारा दिया जाये? सृजनात्मक प्रतिभा को कौन विकसित करेगा? स्पष्ट है कि यह कर्तव्य विद्यालयों का है इसलिए आज ऐसी शिक्षण विधियों की आवष्यकता है जो कि विद्यार्थी को अपने विषय में सोचने के लिए उत्तेजित करेगी। उन्हें शिक्षक व किताबों पर ही आश्रित न रहकर स्वयं समस्या समाधान के लिए प्रेरित करेगी।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

- **सृजनात्मकता** – सृजनात्मकता मानव की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। किसी भी राष्ट्र का उत्थान उस राष्ट्र के नागरिकों की सृजनात्मक शक्ति पर आधारित होता है। इसलिए सृजनात्मकता विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत उन्नति का अमोघ शस्त्र है।
- **शैक्षिक उपलब्धि** – सामान्य रूप से शैक्षिक उपलब्धि से अर्थ लगाया जाता है जो विद्यालय के विषयों में किसी विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में विद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी की मानसिक क्षमता का यह यथार्थ स्वरूप है।
- **उच्च प्राथमिक स्तर** – भारत की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली अधिक प्राचीन है। प्राथमिक शिक्षा को बेसिक, प्राथमिक शिक्षा कहते हैं। जिसमें कक्षा प्रथम से कक्षा आठ तक की शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्कता के प्रभाव का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि व सृजनात्मकता में अन्तर का अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पना

- सरकारी व निजी उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का प्रभाव नहीं पडता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का प्रभाव नहीं पड़ता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की छात्राओं की सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उच्च प्राथमिक स्तर के राजकीय व निजी विद्यालय की (60+60 छात्राओं) का चयन किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी परीक्षण, का प्रयोग किया गया है।

शोध का परीसीमांकन

- शोध क्षेत्र में शोधकर्ता द्वारा जयपुर जिले को चुना गया हैं
- जयपुर जिले की केवल एक सरकारी व एक निजी विद्यालय का चयन किया गया है।
- शोधकर्ता ने समय, धन व श्रम का ध्यान रखते हुए ही अपना शोध कार्य पूर्ण किया है।
- न्यादर्ष में केवल 120 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनमें 60 छात्र व 60 छात्राऐं हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में विष्लेषणात्मक निष्कर्ष निकालने हेतु सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा 'टी'– मूल्य का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण

उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के छात्राओं की सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका

समूह (उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राऐं)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (S.D.)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता स्तर
सृजनात्मकता	20	46	19.04	15.94	अस्वीकृत
शैक्षिक उपलब्धि	20	360	86.01		

उपरोक्त सारणी से अवलोकन से स्पष्ट होता है उपरोक्त तालिका के दोनों समूहों के मध्यमान क्रमषः 46 व 360 है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के छात्राओं की सृजनात्मकता का शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्नता पायी जाती है।

शोध निष्कर्ष

- उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम धारा प्रवाह का अध्ययन करने पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उक्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के आयाम धारा प्रवाह में विभिन्नता होती है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम मौलिकता का अध्ययन करने पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उक्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के आयाम मौलिकता में विभिन्नता होती है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता के आयाम लचीलेपन का अध्ययन करने पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उक्त विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के आयाम लचीलेपन में विभिन्नता होती है।
- उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्नता होती है।

- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकताउ का अध्ययन करने पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनात्मकता का पर्याप्त प्रभाव पडता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध समाज के लिए मार्गदर्शन व प्रेरणा का काम करेगा।
- अगर बालकों की सृजनशीलता का पूर्ण विकास होगा तो राष्ट्र भी उन्नति करेगा। अतः बालकों में सृजनशीलता के विकास हेतु हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए।
- बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु आज समाज के लोगों को भी जागरूक करने की आवश्यकता है।
- समाज के साथ–साथ विद्यालयों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे बालकों का सृजनात्मक विकास करें।
- विद्यालयों द्वारा शिक्षण में नवाचारों को अपनाना चाहिए।
- शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ सृजनशीलता की शिक्षा भी देनी चाहिए।
- शिक्षा व्यवस्था में प्रभावी परिवर्तन लाया जाये। परम्परागत एवं रटन्त विद्या के स्थान पर व्यवहारिक व सृजनात्मक शिक्षा दी जावे।
- विद्यालय में ऐसे पाठ्यक्रम को लागू किया जाना चाहिए जिससे बालक पर ज्ञान थोपा ना जाये, बल्कि शिक्षा का सही अर्थ अन्तर्निहित का विकास करने को प्राप्त किया जा सके।
- जयपुर जिले के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रतिभावान विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के आधार पर महाविद्यालयों में विशेष पाठन व्यवस्था की जा सकती है।
- अध्ययन में न्यादर्श को और बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाठक, पी.डी. (1990)– ''शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. रायजादा, डा. बी. एस. (1997) –''शिक्षा में अनुसंधान के आवष्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
3. शर्मा, आर.ए. (2000)–''शिक्षा अनुसंधान'' आर लाल बुक डिपो
4. कपिल एच.के. (2000)– ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' एच.पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा
5. जयसवाल, डॉ. सीताराम (1970) – ''शिक्षा मनोविज्ञान'' न्यू बिल्डिगस लखनऊ
6. भटनागर, सुरेष (2004)–''बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान'' सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ

❖◆❖